राष्ट्रमाता
कस्तूर - बा गाँधी

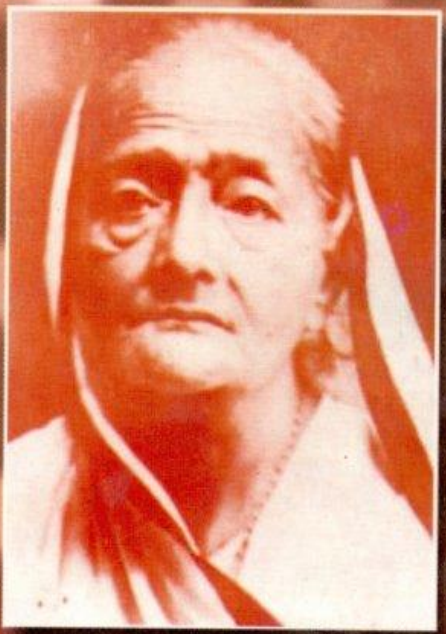

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

भारतीय नारियों के लिए आदर्श—

राष्ट्रमाता कस्तूर-बा

यह उस समय की बात है जब महात्मा गांधी भारतवासियों पर किये जाने वाले अत्याचारों के विरुद्ध दक्षिण अफ्रीका में गोरों की सरकार से जूझ रहे थे। सरकार हिंदुस्तानियों को पदावनत और दीन-हीन बनाने के लिए नये-नये कानून बना रही थी और गांधी जी अपने अहिंसात्मक सत्याग्रह से उसके आक्रमण को व्यर्थ करने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्हीं दिनों सरकारी अधिकारियों ने एक नियम यह बनाया कि भारतवासियों के अपनी धार्मिक पद्धति के अनुसार किये विवाह गैर कानूनी माने जायेंगे और उनकी स्त्रियाँ पत्नी नहीं 'रखेल' के दर्जे की समझी जायेंगी। गांधी जी तो इसके विरुद्ध सत्याग्रह करने ही वाले थे, पर उन्होंने विचार किया कि इस प्रश्न पर यदि स्त्रियाँ भी सत्याग्रह में भाग लेकर जेल जायें तो ठीक रहेगा। साथ ही वे यह भी जानते थे कि स्त्रियों का जेल जाना खतरे का काम है। इसलिए उन्होंने विचार किया कि सबसे पहले अपनी पत्नी कस्तूर-बा को ही इसके लिए तैयार किया जाए। वे जानते थे कि यदि वे बा से जेल जाने को कहेंगे, तो वह इनकार तो नहीं करेगी, पर बाद में उसका कहाँ तक निर्वाह कर सकेगी, इसका निश्चय न था। इसलिए वे ऐसा अवसर खोजने लगे, जब सामान्य बात-चीत करते हुए इसकी चर्चा कर ली जाय।

उस दिन जब बा "फीनिक्स-आश्रम" वालों के लिए रोटी बेल रही थी, पास में बैठे गांधी जी ने कोई अन्य काम करते-करते उससे कहा—"तुझे नये कानून का पता चला या नहीं ?"

बा ने पूछा—"क्या ?"

गांधी जी ने हँसते हुए कहा—"आज तक तू मेरी ब्याही हुई पत्नी थी। अब तू ब्याही पत्नी नहीं रही।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बा ने भौहें चढ़ाकर पूछा—"ऐसा किसने कह दिया ? आप तो रोज-रोज ही नई समस्याएँ खोज निकालते हैं।"

गांधी जी बोले—"मैं कहाँ खोज निकालता हूँ ? वह जनरल स्मट्स कहता है कि ईसाई लोगों के विवाहों की तरह हमारा विवाह सरकारी अदालत के रजिस्टर में दर्ज नहीं हुआ है, इसलिए उसे गैर कानूनी माना जायगा। इस कानून के अनुसार तू मेरी ब्याही हुई पत्नी नहीं, लेकिन "रखेल स्त्री" मानी जायगी।"

यह सुनकर बा का चेहरा तमतमा उठा। वे बोलीं—"उसका सिर ! उस निठल्ले को ऐसी बातें कहाँ से सूझती हैं ?"

गांधी जी—"लेकिन अब तुम स्त्रियाँ क्या करोगी ?"

बा—"आप ही बताइये, हम क्या करें ?"

गांधी जी ने मुसकराते हुए कहा—"हम पुरुष जिस तरह सरकार से लड़ते हैं, वैसे ही तुम स्त्रियाँ भी लड़ो। सच्ची ब्याही हुई पत्नी बनना हो और 'रखेल' न कहलाना हो और अगर तुम लोगों को अपनी आबरू प्यारी हो, तो हमारी तरह तुमको भी सरकार से लड़ना चाहिए।"

बा—"आप तो जेल में जाते हैं !"

गांधी जी—"तू भी अपनी आबरू को बचाने के लिए जेल जाने को तैयार हो बा।"

बा—"हाँ, मैं जेल जाऊँ ! स्त्रियाँ भी कभी जेल जा सकती हैं ?"

गांधी जी—"क्यों, स्त्रियाँ जेल में क्यों नहीं जा सकती ? पुरुष जो सुख-दुःख भोगें, उन्हें स्त्रियाँ क्यों नहीं भोग सकतीं ? राम के पीछे सीता गई थी। हरिश्चंद्र के पीछे तारा गई थी और नल के पीछे दमयंती गई थी और इन सबने जंगल में अपार दुःख सहन किये।"

बा—"वे सब देवताओं जैसे थे। उनके कदमों पर चलने की शक्ति हम में कहाँ है ?"

गांधी जी ने गंभीरता के साथ कहा—"इसमें क्या है ? हम भी उनके जैसा आचरण करें, तो उनके समान बन सकते हैं, देवता हो सकते हैं। राम के कुल का मैं हूँ और सीता के कुल की तू है। मैं राम बन सकता हूँ, तो तू भी सीता बन सकती है। सीता अपने धर्म का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पालन करने के लिए राम के पीछे वन में न गई होती और राजमहलों में ही आराम से रहती, तो कोई उसे सीता-माता न कहता। तारामती हरिश्चंद्र के सत्य के लिए बिकी न होती तो हरिश्चंद्र के सत्यव्रत में कमी रह जाती। तब हरिश्चंद्र को कोई सत्यवादी न कहता और तारामती को कोई सती न कहता। दमयंती नल के साथ जंगल के दुःख भोगने में शामिल न होती तो उसे भी कोई सती नहीं कहता। उसी तरह अगर तुझे अपनी आबरू बचानी हो, मेरी ब्याही हुई स्त्री कहलाना हो, तो तू सरकार से लड़ और जेल जाने के लिए तैयार हो जा।"

बा थोड़ी देर चुप बैठी रही, फिर बोली—"तो आपको मुझे जेल भेजना है, है न ? अब इतना ही बाकी रहा है ! जाऊँगी, जेल में भी जाऊँगी। लेकिन जेल का खाना मुझे अनुकूल आयेगा ?"

गांधी जी—"मैं तुझ से नहीं कहता कि तू जेल में जा। अपनी आबरू की खातिर जेल जाने का उत्साह तुझ में हो, तो जा, और जेल का खाना अनुकूल न आये तो वहाँ फलों पर रहना।"

बा—"जेल में सरकार मुझे फल खाने को देगी ?"

गांधी जी—"फल न दे तब तक तू उपवास करना।

बा (हँसते हुए)—"ठीक, यह आपने मुझे अच्छा मरने का रास्ता बताया ! मुझे लगता है कि जेल में गई तो जरूर मर जाऊँगी।"

गांधी जी इस पर बड़े जोर से हँस पड़े और कहा—"हाँ, हाँ मैं भी यही चाहता हूँ, तू जेल में जाकर मरेगी तो मैं जगदंबा की तरह तुझे पूजूँगा।"

बा—"अच्छा, तब तो मैं जेल जाने को तैयार हूँ।"

गांधी जी बा का निर्णय सुनकर बड़े प्रसन्न हुए। बाद में बा किसी काम से बाहर गईं तो गाँधी जी ने वहाँ उपस्थित एक अन्य सज्जन से कहा—"बा की खूबी यही है कि मन से या बेमन से मेरी इच्छा का अनुसरण करती है।"

आरंभिक जीवन—

कस्तूरबा का जन्म पोरबंदर (सौराष्ट्र) के उसी मोहल्ले में हुआ था जिसमें गांधी जी का घर था। वे आयु में गांधी जी से छह महीना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बड़ी थीं, पर इन दोनों का विवाह संबंध (सगाई) उस समय की परंपरा के अनुसार सात वर्ष की आयु में ही निश्चित हो गया था और तेरह वर्ष की आयु में पाणिग्रहण संस्कार होकर वे पतिगृह में आ गईं। उस समय उनको अक्षर ज्ञान भी नहीं था। स्वयं गांधी जी ने ही रात्रि के समय एकांत में थोड़ा-थोड़ा समय देकर उन्हें इस योग्य बनाया कि वे साधारण चिट्ठी-पत्री बाँच सकें और लिख सकें। इसके पश्चात् सार्वजनिक जीवन में रहने और देश के बड़े-बड़े नेताओं के संपर्क में आने से उनका ज्ञान काफी बढ़ गया, पर पुस्तकीय शिक्षा की दृष्टि से उनकी स्थिति अंत तक सामान्य ही रही।

इतनी छोटी अवस्था में विवाह हो जाने से गांधी जी और बा का दांपत्य जीवन भी धीरे-धीरे और अनेक प्रकार के उतार-चढ़ावों में होकर विकसित हुआ। आरंभ में तो वे इसके महत्त्व और विशेषताओं से सर्वथा अनजान ही थे। उस समय की स्थिति की चर्चा करते हुए गांधी जी ने अपनी 'आत्म-कथा' में लिखा है—

"मुझे याद नहीं पड़ता कि सगाई के समय मुझ से कुछ कहा गया था। इसी प्रकार ब्याह के वक्त भी कुछ पूछा नहीं गया। सिर्फ तैयारियों से ही पता चला कि ब्याह होने वाला है। उस समय अच्छे-अच्छे कपड़े पहिनेंगे, बाजे बजेंगे, जलूस निकलेंगे, अच्छा-अच्छा खाने को मिलेगा, एक नई लड़की के साथ हँसी-खेल करेंगे—ऐसी इच्छाओं के सिवा और कोई भाव मेरे मन में रहा हो ऐसा याद नहीं आता। ब्याह के समय मंडप में बैठे, फेरे फिरे, "कसार" खाया-खिलाया और वर-वधू दोनों साथ रहने लगे ! दो अबोध बालक बिना जाने, बिना समझे संसार-सागर में कूद पड़े। कुछ ऐसा ख्याल आता है कि हम दोनों एक-दूसरे से डरते थे, एक दूसरे से शरमाते तो थे ही। बातें किस तरह करना, क्या करना, सो मैं क्या जानूँ ? धीरे-धीरे एक दूसरे को पहिचानने लगे, बोलने लगे।"

"मुझे अपनी स्त्री को आदर्श स्त्री बनाना था। वह साफ बने, साफ रहे, मैं जो सीखूँ वह भी उसे सीखे, हम एक दूसरे में ओत-प्रोत रहें, यह मेरी भावना थी। मुझे याद नहीं पड़ता कि कस्तूर-बा की भी ऐसी भावना थी। वे निरक्षर थीं, स्वभाव की सीधी, स्वतंत्र, मेहनती और मेरे साथ कम बोलने वाली। उनको अपने अज्ञान से असंतोष न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

था। मैंने अपने बचपन में उनको कभी यह इच्छा करते नहीं पाया कि जिस तरह मैं पढ़ता हूँ, उस तरह वे खुद भी पढ़ें तो अच्छा हो। उन्हें पढ़ाने की मेरी बड़ी इच्छा थी। लेकिन उसमें दो कठिनाइयाँ थीं। एक तो बा की पढ़ने की भूख खुली नहीं थी, दूसरे बा अनुकूल हो जातीं तो भी उस जमाने में भरे-पूरे परिवार में इस इच्छा को पूरा करना आसान नहीं था।"

दक्षिण अफ्रीका में—

पर यह स्थिति थोड़े ही दिन रही। इसके कुछ वर्ष बाद जब कस्तूर-बा गाँधी जी के साथ द० अफ्रीका गईं, तो उनकी दुनिया ही बदल गई। कहाँ एक कट्टर वैष्णव संप्रदाय के नियमों का पालन करने वाली, अधिकांश विषयों में रूढ़ियों और परंपरा के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाली भारतीय नारी और कहाँ योरोपियन सभ्यता और वहाँ का बिल्कुल भिन्न प्रकार का रहन-सहन ? यद्यपि द० अफ्रीका में भारतवासियों और विशेषतः गुजरातियों की संख्या बहुत अधिक थी, पर विदेशी वातावरण में रहने और वहाँ के बड़े लोगों का अनुकरण करने से उनके रहन-सहन में बहुत अंतर आ गया था। सबसे पहली बात तो वहाँ की वेष-भूषा की ही थी। हिंदुस्तान में जिस प्रकार स्त्रियाँ प्रायः नंगे पैर चलती हैं, यह वहाँ की सभ्यता के विरुद्ध है। दूसरी बात यह है कि ठंड ज्यादा पड़ने से वहाँ नंगे पैर रहना भी कठिन है। इसलिए गाँधी जी ने शुरू से ही बा को जूता और मोजा पहिनने को कहा। यद्यपि इसमें कोई दोष की बात नहीं थी, पर फिर भी बा बड़ी कठिनाई से इसके लिए तैयार हुईं।

बा की परीक्षा—

दक्षिण अफ्रीका में जिस मकान में गांधी जी रहते थे, वह भारतीय घरों की तरह नहीं था। योरोपियन लोग कमरों में मोरियाँ नहीं रखते। इसलिए वे पेशाब के लिए एक बर्तन रखते हैं। जिसे कोई नौकर या वे स्वयं उठाकर फेंक देते हैं। गांधी जी के घर में उनके साथ ही उनके मुहर्रिर (क्लर्क) भी रहा करते थे। उनमें से कुछ तो अपने पेशाब का बर्तन स्वयं उठाकर साफ कर लाते थे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और जो ऐसा नहीं करते थे उनके बर्तन गांधी जी या बा को उठा कर साफ करने पड़ते थे। आरंभ में तो बा को यह बुरा लगता था, पर धीरे-धीरे आदत पड़ गई। पर कुछ समय बाद जब एक ईसाई क्लर्क आया, जिसका बाप सबसे नीची जाति का था, तो बा को उसका बर्तन साफ करना असह्य जान पड़ने लगा। पर वे स्वयं खड़ी रहकर यह भी नहीं देख सकती थीं कि गांधी जी उस बर्तन को उठाकर ले जायें। बा उस बर्तन को उठाकर तो ले गई, पर उनकी आँखों से आँसू बहते जाते थे और वे लाल-लाल आँखों से गांधी जी की ओर देखती जाती थीं। उनकी यह विरक्ततापूर्ण मनोवृत्ति गांधी जी को बहुत खटकी। वे एक प्रेमी पति होने के साथ ही सिद्धांतों के मामले में सदा से कठोर थे। इसलिए तुरंत चिल्लाकर कहने लगे—"मेरे घर में यह बखेड़ा नहीं चलेगा ?"

कस्तूर-बा भी रोष से भरकर बोल उठी—"तो अपना घर अपने पास रखो—मैं चली।"

इस पर गांधी जी परिस्थिति को भूलकर एकदम बा का हाथ पकड़कर दरवाजे तक खींच ले गये और उनको बाहर निकालने लगे। तब वह कहने लगीं—"तुम्हें तो शरम नहीं, पर मुझे तो है। मैं बाहर निकलकर कहाँ जाऊँगी ? यहाँ मेरे माँ-बाप भी नहीं, जो उनके यहाँ चली जाऊँ। मैं औरत ठहरी, इसलिए तुम्हारी चपत खानी ही पड़ेगी। अब जरा शरम करो और दरवाजा बंद कर दो। कोई देखेगा तो दोनों को फजीहत होगी।"

इस तरह बड़े संघर्ष के साथ बा अपने को कुछ अंशों में विदेशी वातावरण के अनुकूल बना पाई। इसका आशय यह कि जहाँ तक बाहरी लोगों से संबंध पड़ता था, वहाँ तक वे इस प्रकार का व्यवहार करने लगीं, जिससे कोई उनको सभ्यता के नियमों से अनजान या मूर्ख न समझे। पर निजी व्यवहार में और आंतरिक भावनाओं में वे तब भी पक्की हिंदू ही थीं। खान-पान के विषय में भी वे बड़ी कट्टर थीं और कभी कोई ऐसी चीज ग्रहण करने को तैयार नहीं होती थीं जिसमें अंडा या मांस आदि की मिलावट का संदेह हो। इस संबंध में एक बार बड़ी गंभीर घटना हो गई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कस्तूर-बा को खूनी बवासीर की शिकायत पैदा हो गई थी, जिससे प्रायः रक्तस्राव होता था। गांधी जी के एक डॉक्टर मित्र ने उसको आपरेशन करके ठीक करने को कहा। बा बड़ी कठिनाई से इसके लिए तैयार हुईं। वह बहुत कमजोर हो गई थीं, इसलिए उनको आपरेशन के बाद कुछ दिन डॉक्टर के घर पर ही रखने का निश्चय किया गया। डॉक्टर का घर डरबन में था और गाँधी जी उस समय फीनिक्स आश्रम में रहते थे। आपरेशन के बाद डॉक्टर और उसकी पत्नी द्वारा बहुत सेवा किये जाने पर भी बा की तबियत बराबर गिरती गई। एक दिन कमजोरी के कारण बेहोशी भी आ गई। इसलिए ताकत लाने को डॉक्टर ने मांस का शोरबा देना आवश्यक समझा, पर इसके लिए गांधी जी से पूछना आवश्यक था। उसने टेलीफोन पर उनको अपना विचार बतलाया।

गांधी जी—"मैं तो इसकी इजाजत नहीं दे सकता। पर कस्तूर बा इस संबंध में स्वतंत्र है। अगर वह स्वीकार करे तो आप अवश्य दे सकते हैं।"

डॉक्टर—"रोगी से इस तरह की बात मैं पूछ नहीं सकता। आपको यहाँ आ जाना चाहिए। अगर आप मैं जो चाहूँ वह खिलाने की इजाजत नहीं देते तो मैं आपकी स्त्री के लिए जिम्मेदार नहीं हूँ।"

गांधी जी उस समय डरबन के लिए चल दिये। वहाँ पहुँचने पर डॉक्टर ने बतलाया—"मैंने तो उनको शोरबा पिलाकर ही आपको फोन किया था।"

गांधी जी—डॉक्टर, मैं इसको दगा समझता हूँ।

डॉक्टर—इलाज करते समय मैं दगा-वगा कुछ नहीं जानता। हम डॉक्टर लोग ऐसे समय में रोगी को और उसके रिश्तेदारों को धोखा देने में पुण्य समझते हैं। हमारा धर्म तो किसी तरह भी रोगी को बचाना है।

गांधी जी—खैर जो हुआ सो हुआ, पर मैं जान-बूझ कर अपनी पत्नी को उसकी इच्छा के बिना मांस नहीं लेने दूँगा। इससे उसकी मृत्यु हो जाय तो मैं उसे सहने को भी तैयार हूँ।

डॉक्टर—आपकी फिलासफी मेरे घर बिल्कुल नहीं चलेगी। जब तक वह मेरे यहाँ है, मैं उसको मांस या जो कुछ मुनासिब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होगा—जरूर दूँगा। अगर यह आपको स्वीकार न हो, तो आप पत्नी को ले जाइये। अपने घर में जान-बूझ कर मैं उनकी मौत नहीं होने दूँगा।

गांधी जी फिर कस्तूर-बा के पास गये और सब बातें संक्षेप में समझा दीं। वह अत्यंत कमजोर थी, पर उसने दृढ़तापूर्वक कहा—मैं मांस का शोरबा नहीं लूँगी। मानुस-देह बार-बार नहीं मिलती। भले ही मैं आपकी गोद मर जाऊँ, पर अपनी देह को भ्रष्ट नहीं करूँगी।"

जब मैंने यह बात डॉक्टर को बतलाई, तो वह कहने लगा—"तुम तो बड़े निष्ठुर पति मालूम होते हो। ऐसी बीमारी में उस बेचारी से ऐसी बात कहते तुम्हें शरम नहीं आई। मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हारी पत्नी यहाँ से जाने लायक नहीं है। रास्ते में ही उसका प्राण छूट जाय तो आश्चर्य नहीं, इतने पर भी तुम हठवश नहीं मानोगे, तो तुम्हारी तुम जानो। अगर मैं उसे शोरबा नहीं दे सकता, तो उसे अपने घर में रखने की जोखिम भी नहीं उठा सकता।"

पर कस्तूर-बा बराबर अपनी बात पर दृढ़ रही। गांधी जी ने उसे उठाया तो देखा कि उस हड्डियों के ढाँचे में कुछ भी वजन नहीं रह गया है। गांधी जी यह देखकर घबड़ाने लगे, पर कस्तूर-बा ने उन्हें हिम्मत बँधाते हुए कहा—"मुझे कुछ नहीं होगा, आप चिंता न करें।" अंत में वह लंबी यात्रा तय करके फीनिक्स पहुँच गईं और गांधी जी के प्राकृतिक उपचार और सेवा-सुश्रूषा से स्वस्थ हो गईं।

बा की त्याग वृत्ति—

खान-पान और फैशन की दृष्टि से तो बा का जीवन आरंभ से ही बहुत सादा था, पर अपरिग्रह के विषय में उसको गांधी जी का दबाव सहन करना पड़ा। सन् १९०० में जब वे द० अफ्रीका से वापस आने लगे तो नेटाल के भारतवासियों ने उनकी विदाई के उपलक्ष्य में बहुत बड़ा समारोह किया और उनको सोने, चाँदी तथा जवाहरात के बहुत से पदार्थ भेंट दिये। उसमें ५० गिन्नियों से बना एक हार कस्तूरबा के लिए था। इन भेंटों को पाकर गांधी जी बड़ी चिंता में पड़ गये और उस रात उनको जरा भी नींद नहीं आई। हजारों के मूल्य के उपहारों को छोड़ देना कठिन जान पड़ता था, पर उनको

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रखना उससे भी कठिन लगता था। अंत में वे इसी निर्णय पर पहुँचे कि अपनी सेवा का इस प्रकार का बदला लेना किसी प्रकार उचित नहीं। इससे कभी दूसरों को तथा अपने स्त्री-बच्चों को भी अच्छी प्रेरणा नहीं मिल सकती। इसलिए उचित यही है कि उनको कुछ ट्रस्टियों के सुपुर्द करके सार्वजनिक कार्यों में खर्च कर दिया जाय।

गांधी जी ने तो अपने दार्शनिक विचारों के अनुसार थोड़ी देर में यह निर्णय कर लिया, पर कस्तूरबा को इसके लिए तैयार करना सहज न था। वह कहने लगी—"चाहे तुमको जरूरत न हो और मुझे भी तुम गहने न पहनने दो, पर मेरी बहुओं को तो उनकी जरूरत होगी। इतने प्रेम से दी गई चीज लौटाई नहीं जाती।"

गांधी जी ने समझाने के ढंग से धीरे से कहा—"लड़कों की शादी तो होने दो। हमें कौन बचपन में इन्हें ब्याहना है। बड़े होने पर वे जो चाहे सो करें और हमें कौन गहनों की शौकीन बहुएँ ढूँढ़नी हैं। फिर भी कुछ बनवाना ही पड़ा, तो मैं तो हूँ ही न ?"

बा—"तुम्हें तो मैं जानती हूँ। तुम वही हो न, जिन्होंने मेरे गहने भी छीन लिए ? तुमने जब मुझे सुख से नहीं पहिनने दिया तो तुम मेरी बहुओं के लिए क्या लाओगे ? बच्चों को तो तुम अभी से बैरागी बनाना चाहते हो और मेरे हार पर तुम्हारा क्या हक है ?"

गांधी जी—"लेकिन यह हार तुमको तुम्हारी सेवा के लिए मिला है या मेरी सेवा के कारण ?"

बा—कुछ भी हो, तुम्हारी सेवा मेरी भी सेवा हुई। मुझ से रात-दिन मजदूरी कराई, सो क्या सेवा नहीं मानी जायगी ? मुझे रुला-रुलाकर हर किसी को घर में रखा और चाकरी कराई, उसका कोई हिसाब नहीं ?

उस समय तो गांधी जी के दबाव से ही बा उन गहनों को वापस देने को राजी हुई, पर बाद में उन्होंने इसका औचित्य समझ लिया कि सार्वजनिक सेवकों को निश्चय ही निस्पृह होना चाहिए, अन्यथा उनकी सेवा का मूल्य बहुत घट जाता है। आजकल तो हमारे देश में इस प्रकार के लोभ-लालच की हद हो गई है। लोग काम तो करेंगे छटांक भर, पर उसका बदला चाहेंगे सेर भर। इससे सार्वजनिक जीवन की और विशेषकर राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वालों की मिट्टी पलीद हो रही है और जनता की दृष्टि में वे सम्मान के बजाय उपेक्षा और निंदा के पात्र हो रहे हैं। हम अपने पाठकों को बड़ी दृढ़ता के साथ यह सम्मति देंगे कि चाहे वे सार्वजनिक सेवा और जन-कल्याण के कार्य अधिक न करें, उनके लिए अपनी कम से कम हानि सहन करें, पर जो कुछ करें वह निःस्वार्थ भाव से अपना धर्म-कर्तव्य समझकर करें। ऐसा करने से उनका वह थोड़ा-सा सेवा-कार्य भी महान् बन जायेगा। सेवा-कार्य की महत्ता सब हमारी मानसिक भावना में है। अगर हम स्वार्थ की भावना रखते हुए कोई "परमार्थ-कार्य" करते हैं तो वह कभी श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकेगा।

पहली स्त्री सत्याग्रही—

जैसा आरंभ में लिखा जा चुका है, जब दक्षिण अफ्रीका की गोरी सरकार ने हिंदू-मुसलमानों के विवाह को गैरकानूनी बनाकर उनकी स्त्रियों को पत्नी के बजाय "रखेल" कहने का निश्चय किया, तो गांधी जी ने उसके विरुद्ध सत्याग्रह किया और उसमें स्त्रियों को शामिल करना उन्होंने आवश्यक समझा। पर यह एक खतरनाक काम था। जेलों का वातावरण दूषित होता है और वहाँ का व्यवहार भी अपमानजनक जैसा ही होता है। इसलिए घर के भीतर रहने वाली और तरह-तरह के छुआछूत और शुद्ध-अशुद्ध के जंजालों में फँसी हिंदू स्त्रियाँ, यदि जेल-जीवन से घबड़ाकर दो-चार दिन में ही माफी माँगकर चली आवें तो इसमें समस्त सत्याग्रह-आंदोलन की बड़ी बदनामी और हानि थी। यद्यपि गांधी जी ने बातों ही बातों में इसकी चर्चा बा से कर दी, पर उन्होंने यह स्पष्ट आग्रह कभी नहीं किया कि वे सत्याग्रह करके अवश्य जेल जायें। इसके बजाय उन्होंने अन्य बहनों से इसके लिए पूछा। उन सबने अपनी रजामंदी बतलाई और कहा कि चाहे जितना भी कष्ट सहन करना पड़े, हम लोग जेल की सजा पूरी करके आयेंगी। बा ने जब ये सब बातें सुनीं तो उनको कुछ बुरा लगा और उन्होंने गांधी जी से कहा—"मुझ से आप जेल जाने को क्यों नहीं कहते ? मुझमें ऐसी कौन-सी कमी है, जिससे मैं जेल न जा सकूँ ?"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गांधी जी ने उत्तर दिया—"मैं न तो तुमको कभी दुःखी कर सकता हूँ, न तुम्हारे ऊपर अविश्वास कर सकता हूँ। तुम्हारे जेल जाने से तो मुझे बड़ा संतोष होगा, पर यदि मेरे मन में यह ख्याल बना रहे कि तुम मेरी आज्ञापालन करके जेल गई हो तो यह मुझे बुरा जान पड़ेगा। ऐसे काम सबको अपनी हिम्मत से ही करने चाहिए। तुम जेल में जाकर जेल के कष्टों से ऊब जाओ, तो यह मुझे कैसा अच्छा लगेगा ?"

बा—"मैं हार मानकर जेल से बाहर चली आऊँ तो मुझे अपने पास मत रहने देना। मेरे बच्चे तक सह सकें, आप सब सहन करते रहें और मैं अकेली ही उसे न सह सकूँ, ऐसा कैसे हो सकता है ? ऐसा आप क्यों सोचते हैं ? मुझे इस सत्याग्रह की लड़ाई में भाग लेना ही होगा।"

जेल में जाकर बा ने बहुत कष्ट सहन किये। वहाँ का अशुद्ध ढंग से बनाया और गंदे बर्तनों रखा भोजन तो वे खा ही कैसे सकती थीं ? इसलिए जेल में पहुँचकर उन्हें भूखा ही रहना पड़ा। पाँच दिन के बाद सरकार झुकी और उनको फल देने की आज्ञा दी। पर केवल तीन केला, चार प्रून्स, दो टमाटर और दो नीबू मिलते थे। इस प्रकार तीन महीना तक जेल के भीतर बा को आधा पेट ही रहना पड़ा। इसलिए जेल की सजा पूरी करके जब वे बाहर आईं तो हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गई थीं। उस समय सब कोई उनको देखकर शोकाकुल हो गए। अफ्रीका के गोरे जैसे विदेशी और विधर्मी लोगों की जेल में एक धार्मिक विचारों की हिंदू स्त्री का रहना वास्तव में बड़ा कठिन था, पर बा ने साहस करके सब संकटों को सहन कर लिया, यह एक ऐसा आदर्श था, जिससे हमारी सब बहनें लाभ उठा सकती हैं।

बा की परिश्रमशीलता—

बा का जीवन आरंभ से ही परिश्रम करने का रहा था। गांधी जी सदा से ही बड़ी देख-रेख और जाँच-पड़ताल करने वाले पति थे। यह कस्तूर बा की निरालस्यता और सेवा परायणता का ही परिणाम था कि वह उनकी पसंद का कार्य करके उन्हें संतुष्ट रखती थीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसलिए वे रात को चाहे जल्दी सो गई हों या देर से, ३ बजे प्रार्थना होने के समय अवश्य जग जाती थी। गांधी जी तो प्रार्थना समाप्त हो जाने पर फिर थोड़ी देर के लिए सो जाते थे, पर बा उसी समय से उनके स्नान के लिए पानी गरम करने और जलपान के लिए शहद या वैसी ही कोई चीज तैयार करने में लग जाती थीं। वैसे अन्य अनेक व्यक्ति गांधी जी की किसी प्रकार की सेवा करने को इच्छुक रहते थे, पर बा जानती थी कि गांधी जी जिस प्रकार प्रत्येक विषय में गहरी छानबीन करते रहते हैं, उसे देखते हुए अन्य लोगों के कार्य में कोई त्रुटि निकल आना बहुत संभव है। इसलिए अगर किसी के आग्रह करने पर बा दूसरों को कोई काम करने का मौका दे भी देती थीं, तो भी बराबर यह निरीक्षण करती रहती कि उसमें कोई कमी तो नहीं रह गई। खासकर बर्तनों की सफाई की तरफ उनका बहुत ध्यान रहता था। जब वे देखतीं कि किसी लड़की के मजे हुए बर्तनों में कुछ कमी रह गई है तो स्वयं उनको पूरी तरह साफ कर डालती थीं। वे प्रातःकाल से ही दिन भर किस प्रकार व्यस्त रहती थी, इसका वर्णन करते एक हुए एक आश्रमवासी ने लिखा है—

बापू सबेरे लगभग ७ बजे घूमने निकलते। उस समय बा अपने स्नान आदि कामों से निपट लेतीं और पूजा-पाठ पर बैठ जातीं। लगभग एक घंटा गीता जी और तुलसी-रामायण का पाठ करतीं। इसके बाद वे रसोईघर में पहुँच जातीं और वहाँ सब ठीक ढंग से चल रहा है या नहीं, इसका पता एक निगाह में ही लगा लेतीं। कोई खाद्य सामग्री खुली पड़ी हों, शाक या फल बिगड़ने की हालत में हों तो वह तुरंत उनको ठीक करने लगतीं। वे बहुत स्पष्टवक्ता थीं, इसलिए जिसको जो कहना होता, साफ-साफ कह देतीं। मुँह से हाँ-हाँ कहने और अंगीकृत काम को भली भाँति न करने वालों से बा बड़ी नाराज रहा करती। इसलिए नये आये हुए लोगों को कभी-कभी बा की बात बुरी भी लग जाती। वे प्रत्येक वस्तु को ठीक जगह सफाई से रखना पसंद करती थीं और जो कुछ गिरा या पड़ा देखतीं, उसे अपने हाथों से ठीक करने लग जातीं। अगर कभी किसी के नाराज होने की चर्चा गांधी जी के पास पहुँचती तो वे कहते—"अगर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बा के पास थोड़ा-बहुत कड़ुवा नीम है, तो मीठी मिसरी तो बहुत ज्यादा है।"

गांधी जी का भोजन बा स्वयं ही तैयार करती थीं। अगर कोई और बनाने लगता तो पास ही खड़ी हुई देखती रहतीं कि हर एक चीज ठीक बन रही है या नहीं। वे भोजन बनाने में बहुत निपुण थीं और गांधी जी की रुचि के अनुकूल खाद्य पदार्थ बनाने का पूरा ध्यान रखती थीं। भोजन की घंटी बजने पर वे सब मेहमानों को भोजन परोसकर स्वयं भी गांधी जी के पास ही खाने बैठ जातीं। उस समय भी उनकी एक आँख तो बापू की तरफ ही रहती। एक मक्खी को भी आते देखतीं तो उनका बाँया हाथ तुरंत पंखे को सँभाल लेता। भोजन समाप्त होने पर वे बापू के साथ उनके कमरे में आतीं। वे अखबार पढ़ने लगते तो बा उनके तलवों में मालिश करने लगती। जब उनकी आँखें लग जातीं तो वह भी उठकर अपने कमरे में आतीं और १५-२० मिनट के लिए लेट जातीं। उसके बाद उठकर अखबार पढ़ने लग जातीं।"

यद्यपि बा ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थीं, तो भी अखबारों के जरिये देश की हालत का पता रखती थीं। वह "हरिजन बंधु" को इसलिए पूरा पढ़ डालतीं कि विभिन्न कार्यक्रमों के विषय में गांधी जी के विचारों का पता चलता रहे। अखबारों में दुनिया की मुसीबतों और तकलीफों का हाल पढ़कर बा को बहुत दुःख होता। महायुद्ध का हाल पढ़कर वे कहने लगतीं "क्या यह लड़ाई दुनिया का तबाह करके ही बंद होगी ?" बंगाल के भीषण अकाल की खबरें पढ़कर बा ने "आगाखान महल" के जेलखाने से एक पत्र में लिखा—"बंगाल के समाचार पढ़कर तो दिल फटता है। वहाँ तो आसमान ही फट पड़ा है। न जाने ईश्वर क्या करने वाला है ?"

पढ़ने की हार्दिक आकांक्षा—

बचपन में तो बा को किसी ने पढ़ाया नहीं, पर बड़ी उम्र में वातावरण बदल जाने पर उनको पढ़ने का शौक हो गया था। हर रोज एक-आध घंटा वे किसी न किसी के पास कुछ न कुछ पढ़ा ही करती थीं। राष्ट्रभाषा होने के ख्याल से हिंदी का अभ्यास वे प्रायः

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किया करती थीं। कभी किसी की मदद से तुलसी-रामायण पढ़तीं और कभी गीता का अभ्यास करतीं। अपनी आयु के अंतिम वर्षों में आगाखान महल में कैद रहते हुए वे गांधी जी से गीता जी के श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करना सीखती थीं। इन दोनों ७५-७५ वर्ष के आयु के 'शिक्षक और विद्यार्थी' का दृश्य देखते ही बनता था। बा जो कुछ सीखना शुरू करती थीं, बड़ी श्रद्धा के साथ सीखतीं और इतनी उम्र हो जाने पर भी एक विनम्र विद्यार्थी की तरह पढ़ने को बैठती। उन्हें कुछ लिखने को दिया जाता तो उसे भी वे छोटे विद्यार्थी जिस प्रकार अपना सबक तैयार करके लाते हैं, उसी तरह दूसरे दिन लिखकर लातीं। लिखने में कितनी ही अधिक गलतियाँ क्यों न हुई हों, उन्हें सुधारकर दुबारा लिखने में वे कभी उकताती न थीं।

बा के अंग्रेजी सीखने का वर्णन भी बड़ा मनोरंजक है। यह तो कहा ही जा चुका है कि आरंभ में वे कुछ पढ़ी-लिखी न थीं। पर जब गांधी जी के साथ दक्षिण अफ्रीका गईं, तो वहाँ उनको लाचार होकर अंग्रेजी ही सुनना और बोलना पड़ा। उन्होंने दूसरों से सुनकर कुछ शब्द याद कर लिए थे और उन्हीं को बोलकर अपना भाव प्रकट कर देती थीं। कुछ समय बाद गांधी जी के सहकारी मि० पोलक की पत्नी भी गांधी जी के द० अफ्रीका स्थित "फीनिक्स-आश्रम" में रहने लगीं। उनकी संगत में रहने से उनको बोलने का इतना अभ्यास हो गया, जिससे भारतवर्ष में वापस आने पर गांधी जी से मिलने को आने वाले विदेशी मेहमानों से सामान्य बातचीत कर लेती थीं। सन् १९३० में जब उनको सत्याग्रह में जेल का दंड दिया गया, तो वहाँ उन्होंने अंग्रेजी लिखना व सीखने का भी प्रयत्न किया। इस संबंध में सो० लाभु बहन ने, जो उनके साथ जेल में थीं, एक संस्मरण में लिखा है—

"बा को पता चला कि मैं अंग्रेजी जानती हूँ, तो उन्होंने मुझ से अंग्रेजी पढ़ना शुरू किया। इतनी बड़ी उमर में, इतने बड़े पद को पहुँचने के बाद भी मेरे पास बैठकर अंग्रेजी सीखने में उनको न तो हीनता मालूम हुई, न शरम। उन्हें तो एक ही धुन लगी थी कि स्वयं बापू का पता अंग्रेजी में लिख सकें। "ए-बी-सी-डी" पर लगातार कई-कई दिन तक मेहनत करने पर भी वे कभी उकतायी नहीं। एक ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नाम को २०-२५ बार लिखते वे कभी थकी नहीं और न जल्दी-जल्दी नये-नये शब्दों या वाक्यों को सीखने की उन्होंने कभी इच्छा की। वे कहा करतीं—"अंग्रेजी आ जाय तो बापू को जो पत्र लिखती हूँ, उसका पता तो किसी से न लिखवाना पड़े और उनके पास जो ढेर की ढेर डाक आती है, उसमें से मेरा पत्र खुद ही पहचाना जा सके न !"

अंग्रेजी पढ़ी हुई न होने पर भी बा कभी-कभी बड़ी-बड़ी मार्मिक बात बोल देती थीं। सन् १६२२ से १६२४ तक जब गाँधी जी यरवदा जेल में थे तो उन्होंने किसी कैदी की खुराक के संबंध में कुछ माँगें पेश कीं। पर जब सुपरिंटेंडेंट ने उनको नामंजूर कर दिया तो गांधी जी को बुरा लगा और उन्होंने केवल दूध पर ही रहने का निश्चय किया। इस तरह चार सप्ताह बीत गये और उनका वजन १०४ से घटकर ६० पौंड रह गया। जब बा के साथ परिवार के कुछ लोग उनसे मिलने गए और यह सब हाल मालूम हुआ तो उन्होंने आग्रह किया कि वे इस प्रयोग को छोड़कर फल लेने लगें।

यह देखकर सुपरिंटेंडेंट ने बा से कहा—"मि० गांधी यह जो सब करते हैं, उसमें मेरा कोई कसूर नहीं है।"

बा ने जवाब दिया—"यस, आई नो माई हसबैंड, ही आलवेज मिसचीफ।" अर्थात् "ठीक है, मैं अपने पति को पहचानती हूँ। उन्हें रोज कुछ न कुछ शरारत ही सूझती है।"

यद्यपि बा ने "मिसचीफ" (शरारत) शब्द का प्रयोग अन्य कोई शब्द न आने से ही किया था, पर यदि गहराई से देखा जाय तो वह गांधी जी के चरित्र का बिल्कुल सही चित्रण था। उनका आशय यही था कि गांधी जी कभी चुप बैठने वाले नहीं हैं, न वे कभी खुद चैन से बैठते हैं और न दूसरे को बैठने देते हैं। ऐसे व्यक्ति को यदि प्यार में "शरारती" कह दिया जाय तो कोई दोष नहीं।

बा के इस उदाहरण से हमारी अन्य महिलाएँ बहुत प्रेरणा ले सकती हैं। यहाँ कुछ ही अधिक उमर हो जाने पर स्त्रियाँ कहने लगती हैं—"अब गृहस्थी के झंझट में पढ़ना-लिखना कैसे संभव हो सकता है ?" वे दिन में कई घंटे व्यर्थ की बातों में खर्च कर देती हैं, पर केवल पढ़ना ही उनको पहाड़ नजर आता है। वास्तव में यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनकी श्रद्धा और धैर्य की कमी ही होती है, जिससे वे शिक्षा जैसी जीवन की कायापलट करने वाली चीज से वंचित रह जाती हैं। बा के ऊपर गांधी जी के रहन-सहन की व्यवस्था और आश्रम के कितने ही कार्यों का पर्याप्त भार था, तो भी वे पढ़ने-लिखने का कुछ समय नियमित रूप से निकाल ही लेती थीं। इसका यह परिणाम हुआ कि वे देश और विदेशों के माननीय पुरुषों से बात-चीत करने और महात्मा गांधी जैसे महामानव को सहयोग देने योग्य बन गईं। अपने गुणों के कारण ही गांधी जी के साथ उन्होंने अपना भी नाम अमर कर लिया। निश्चय ही उनका उदाहरण भारतीय नारियों के लिए अनुकरणीय है।

सेवा का अद्‌भुत आदर्श—

पढ़ने के अतिरिक्त दोपहर में ही सूत कातने का कार्यक्रम पूरा किया जाता था। वे प्रतिदिन काफी तादाद में बारीक सूत कातती थीं। चार बजे से फिर रसोई का काम शुरू हो जाता और ५ बजे वे गांधीं जी को खाना खिला देती थीं। वे स्वयं बहुत वर्षों से एक बार ही भोजन करती थीं। शाम को केवल थोड़ी-सी काफी पीती थीं। अंतिम चार वर्षों में काफी भी छोड़ दी थी। तब वे दूध में तुलसी की कुछ पत्तियाँ और काली मिर्च उबालकर उसी को पी लेती थीं।

शाम को गांधी जी जब घूमने को जाते तो बा आश्रम में कोई बीमार होता तो उसके पास जाकर बैठतीं और तबियत का हाल मालूम करतीं। फिर अन्य महिलाओं को लेकर स्वयं भी घूमने को जातीं और जहाँ गांधी जी वापस आते हुए मिल जाते, वहीं से उनके साथ लौट आतीं।

संध्याकाल की प्रार्थना में बा सदैव उपस्थित रहती थीं और दूसरे लोगों के साथ रामायण का पाठ भी करती थीं। प्रार्थना समाप्त होने पर सब महिलाओं से थोड़ी देर बातें करतीं और फिर गांधी जी के और अपने सोने की तैयारी करने में लग जातीं। सोने के समय गांधी जी के सिर में तेल मलने का काम तो बा जीवन के अंतिम समय तक नियमित रूप से करती रहीं। सुबह चार बजे फिर उठ के आगामी दिन के कामों में लग जाना, यही उनकी नियमित दिनचर्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थी। यद्यपि अपने यहाँ करोड़ों स्त्रियाँ ऐसी हैं, जिनको अपनी घर-गृहस्थी में इससे अधिक परिश्रम करना पड़ता है, पर बा इस कार्य को जिस प्रकार श्रद्धा और कर्तव्य भावना से करती थी, उसने उनकी सेवा को एक पवित्र पूजा या उपासना का रूप दे दिया था। इस संबंध में बा की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए मीरा बहिन (मिस स्लेड) ने लिखा है—

"मैंने भी कई सालों तक बापू की सेवा-चाकरी की है। इस बीच में मुझे बा के अद्‌भुत गुणों का दर्शन हुआ। प्रायः ऐसा होता कि बापू की निजी जरूरतों की खबरदारी रखने का काम सिर्फ हम दोनों पर आ पड़ता। बापू के तूफानी दौरों में तो बहुत-सी अड़चनें और कठिनाइयाँ रहतीं, पर बा अचूक नियमितता से, बिना थके, इस काम को बड़ी खूबी के साथ किया करतीं। बापू के लिए भोजन बनाने और उनकी मालिश करने का काम तो वे अपने ही हाथ में रखतीं। उसमें जहाँ-तहाँ थोड़ी मदद मुझसे भी ले लेतीं। कपड़े धोने और सामान बाँधने-खोलने का काम मेरे जिम्मे था। लेकिन उसमें भी बा की पैनी नजर बराबर मेरे काम पर बनी रहती। बा मानो कभी थकती ही न थी। सभाओं और मुलाकातों में बापू को रात में कितनी ही देर क्यों न हो जाय, बा उनके सिर में तेल मलने और उनके थके-माँदे शरीर को दबाने के लिए उनकी राह देखती बैठी ही रहतीं और फिर सुबह चार बजे की प्रार्थना में हाजिर रहकर पुनः बापू की सेवा में लग जातीं। वे गैर-जरूरी बातें करके बापू का वक्त कभी खराब नहीं करतीं। बापू के आस-पास के सभी लोगों में वे बापू को कम से कम तकलीफ देतीं और उनकी ज्यादा से ज्यादा सेवा करतीं।"

इस जीवनचर्या के महत्त्व को समझते हुए यदि हम बा को एक "योगी" की संज्ञा दें तो उसमें कुछ अनुचित नहीं है। "गृहस्थ-योग" भी योगशास्त्र की एक शाखा माना गया है और पौराणिक कथाओं के अनुसार प्राचीन काल में अनेक नारियों ने इसी के द्वारा महान् सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। बा की सेवा और परिचर्या भी लगभग निष्काम कर्मयोग की श्रेणी में जा पहुँची थी। बा की मनोभावना के संबंध में हमारा अनुमान कहाँ तक ठीक है ? इसके संबंध में गांधी जी के वक्तव्य की कुछ पंक्तियाँ यहाँ उद्‌धृत करना अप्रासंगिक न होगा—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"बा का जबर्दस्त गुण केवल अपनी इच्छा से मुझ में समा जाने का था। यह कुछ मेरे आग्रह से नहीं हुआ था, लेकिन समय पाकर बा के भीतर से ही इस गुण का विकास हो गया था। मैं नहीं जानता था कि बा में यह गुण छिपा हुआ था। मेरे शुरू-शुरू के अनुभव के अनुसार बा बहुत हठीली थी। मेरे दबाव डालने पर भी वह अपना चाहा ही करती। इसके कारण हमारे बीच थोड़े समय की या लंबी कड़वाहट भी रहती, लेकिन जैसे-जैसे मेरा सार्वजनिक जीवन उज्ज्वल बनता गया, वैसे-वैसे बा खिलती गई और दृढ़ विचार के साथ मुझमें यानी मेरे काम में समाती गई। जैसे दिन बीतते गये, मुझमें और मेरे काम में, सेवा में भेद न रह गया। बा धीमे-धीमे उसमें तदाकार होने लगी। शायद हिंदुस्तान की भूमि को यह गुण अधिक-से-अधिक प्रिय है। कुछ भी हो, मुझे तो बा की उक्त भावना का यही मुख्य कारण मालूम होता है।"

बा की सेवा भावना—

गांधी जी की सेवा और देखभाल तो बा का मुख्य कर्तव्य था ही, पर स्वभाव से ही सेवा-भाव वाली स्त्री थी। कुछ तो स्वभाव से ही और फिर गांधी जी के सहवास तथा उदाहरण से उनका जीवन त्यागमय बन गया था। उनकी अपनी जरूरत बहुत कम थीं। जब कभी गांधी जी अपने साथियों को लेकर बाहर जाते थे तो बा का बिस्तर सबसे छोटा होता था। वे बड़ी युक्ति और सुघड़ता से थोड़े से सामान से ही अपना सब काम चला लेती थीं। गांधी जी अक्सर कहा करते थे कि मैंने भी अपनी जरूरतों को बहुत कम कर दिया है और तरह-तरह के कपड़े पहिनना ही बंद कर दिया है, पर तो भी मेरा बिस्तर बा के बिस्तर से दुगुना होता है।

इसी प्रकार जब कोई अन्य प्रांत का युवक आश्रम में आया और उसने एक आलोचक की तरह गांधी जी से कहा कि "आप सब किसी को तो चाय आदि पीने से रोकते हैं, पर बा तो प्रतिदिन दो बार काफी पीती हैं" तो गांधी जी ने उसे उत्तर दिया—"तुमको मालूम है कि बा ने कितना अधिक त्याग किया है ? कितनी वस्तुओं और आदतों को छोड़ा है ? अब अगर मैं उसकी इस अंतिम छोटी-सी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आदत को भी छुड़ाने की कोशिश करूँ तो मुझ-सा निर्दय पति और कौन होगा ?"

सन् १६३६ में गांधी जी कलकत्ता से काफी बीमार होकर वर्धा आये। उस समय यह समस्या सामने आई कि वे कहाँ सोयेंगे ? पहले तो वे अनेक आदमियों के साथ एक बड़े हाल में सोते थे, पर अब आश्रमवासियों ने विचार किया कि बीमारी की हालत में उनको कोई ऐसा स्थान दिया जाय जिससे वे शांति से रह सकें। इस उद्देश्य से मीरा बहिन ने अपना कमरा उनके सोने के लिए तैयार करके रखा था। पर गांधी जी ने कहा—"मीरा ने तो वह कमरा अपने रहने तथा खादी के काम के लिए बनवाया है। मैं उसमें कैसे रह सकता हूँ ? मैं तो अपने पुराने कोने में ही रहूँगा।"

मगर उस कोने में भी जगह कहाँ थी ? वहाँ पहले ही कई व्यक्ति सोते थे। अगर बीमारी की हालत में गांधी जी वहाँ सोयेंगे तो उनको अवश्य तकलीफ होगी। यह देखकर बा ने आगे बढ़कर कहा—"मेरा कमरा है न ?" इस पर गांधी जी उसमें सोने लगे। पर वह कमरा छोटा था और उसमें भी एक-दो अन्य लोग गांधी जी के साथ सोने को पहुँच गए। बा ने इस पर भी कोई एतराज नहीं किया, पर दूसरे दिन नाश्ता करते हुए गांधी जी ने ही कहा—"मैंने खास तौर पर यह घर बा के लिए ही बनवाया था और अब मैं इस पर कब्जा किये बैठा हूँ। बा को आज तक कभी कोई अलग कोठरी मिली ही नहीं। मेरा और बा का जो कुछ था वह शुरू से ही सबके लिए था। पर इस ख्याल से कि बा को इस बुढ़ापे में थोड़ा एकांत मिल जाय तो अच्छा हो, मैंने यह घर बनवाया। पर बा ने कभी इसका उपयोग अकेले नहीं किया। उसने कई लड़कियों को इसमें अपने साथ रखा है। लेकिन मेरे आ जाने से तो बा को यहाँ से बिल्कुल निकल जाना पड़ता है, क्योंकि मैं जहाँ रहता हूँ, वहीं मेरे रहने की जगह धर्मशाला बन जाती है। मुझे यह खटकता है, पर बा ने कभी इसकी शिकायत नहीं की। मैं जो चाहता हूँ, बा से ले लेता हूँ, हर किसी को बा के पास भेज देता हूँ, पर वह हमेशा इसके लिए रजामंद रही है।" इसके बाद वे अपनी चारपाई के पास ही बैठी हुई बा से हँसकर कहने लगे—"होना भी तो यही चाहिए, न ? अगर मियाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक कहे और बीबी दूसरा तो जीवन खारा हो जाय। लेकिन यहाँ तो मियाँ की बात को बीबी ने सदा माना ही है।"

एक अन्य अवसर पर जब कुछ हरिजनों ने गांधी जी के खिलाफ सत्याग्रह किया तो पाँच व्यक्तियों की एक टोली सेवाग्राम में धरना देने और उपवास करने को पहुँची। गांधी जी ने बजाय नाराज होने के उनका स्वागत किया और कहा कि आश्रम में बैठने के लिए जो स्थान उनको सुविधाजनक प्रतीत हो उसी को पसंद करके ले लें। बा की झोंपड़ी में एक बड़ा कमरा और एक छोटा कमरा था। हरिजनों ने बा का बड़ा कमरा ही पसंद किया। गांधी जी ने बा को बुलाकर पूछा—"तू इन हरिजन भाइयों को अपना वह कमरा बैठने के लिए देगी न ?"

अपने खिलाफ उपवास करने के लिए आये हुए हरिजनों को बापू ऐसी सुविधाएँ दें और बा को नहाने के छोटे से कमरे में ही सब काम चलाना पड़े, यह उसे ठीक नहीं जान पड़ा। उसने ताना मारते हुए कहा—"आपने तो इन लोगों को अपने बेटे मान रखा है, तब आप इन्हें अपनी झोंपड़ी में ही क्यों नहीं बैठाते ?"

गांधी जी—"हाँ, ये मेरे बेटे हैं। पर मेरे बेटे तेरे भी तो बेटे हुए न ?"

इन शब्दों ने बा को लाचार बना दिया और उसने हरिजनों को अपने बड़े कमरे में बैठने की सुविधा कर दी। बा न केवल उन लोगों की धाँधली ही सहन करती थी, वरन् उनके लिए पानी आदि की भी व्यवस्था कर देती थी।

आश्रम में सबका स्वागत-सम्मान—

बा की यही सेवा भावना गांधी जी के पास आने वाले सब मेहमानों के लिए प्रकट होती थी। वे लोग गांधी जी के साथ तो केवल अपने काम की बातें ही करते थे, पर उनकी सब आवश्यकताओं की व्यवस्था बा ही करती थी। कोई भी परिचित या अपरिचित व्यक्ति आश्रम में आये बा उसका स्वागत बड़े प्रेम से करती—"कहाँ से आये हो ? सीधे यहीं आ रहे हो ? खाना खाया या नहीं ? गाड़ी में बहुत तकलीफ तो नहीं हुई ?" ऐसी सभी छोटी-बड़ी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बातें वह पूछ लेतीं और जिसने खाना न खाया हो तो उसकी व्यवस्था करतीं।

आश्रमवासियों से भी वे प्रायः पूछती रहतीं—"खाना तो तुम्हें पसंद पड़ता है ? देखना, कोई तकलीफ न उठाना। किसी चीज की जरूरत हो तो मुझसे कहना।"

मेहमानों की व्यवस्था करने में बा गांधी जी के नियमों को भी ढीला कर देती थीं। दीनबंधु एंडरूज का काम चाय के बिना चल ही नहीं सकता था। पर गांधी जी के पास तो किसी को चाय कैसे मिलती ? इसलिए बा उनको बुलाकर चाय पिलाती थीं। गांधी जी अनेक बार बा को उलाहना देते "बा, तू दीनबंधु को बुरी आदत लगा रही है !"

बा भी उन्हीं की तरह उलाहने के स्वर में कहती—"अब रहने भी दीजिए ! आप तो बस अपनी ही बात चलाते रहते हैं। सभी लोगों पर इस तरह सिरजोरी नहीं की जा सकती। मैं ही इसके लिए काफी हूँ।"

बा के आश्रम में रहने से ही श्री राजगोपालाचार्य को चाय, काफी मिलती थी और जवाहर लाल जी भी खास स्वाद वाली चाय बा के कारण ही पा सकते थे। राजेंद्रबाबू, सरदार पटेल, मोतीलाल नेहरू, मौलाना आजाद सभी के आराम का ध्यान बा ही रखती थी। ये बड़े नेतागण भी गांधी जी के साथ घंटों चर्चा करके चाहे जितने थक जाते हों, फिर भी वे बा से मिले बिना नहीं रहते थे।

ये नेतागण भी बा से अलग-अलग ढंग से मिलते थे। सरदार पटेल तो उनके पास आकर छोटे कान्हा को खूब चिढ़ाते और उसके साथ ऊधम करने में उन्हें आनंद आता। मौलाना आजाद गंभीर भाव से बा के पास आकर उसकी तबियत का हाल पूछते, जवाहर लाल जी जब मौज में होते तो कोई क्रांतिकारी बात कहकर बा को चिढ़ाने का प्रयत्न करते और ज्यादा थके होते तो दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करते और चुपचाप चले जाते। इस तरह बा हर एक नेता की सँभाल रखती और सभी नेता बा का आदर करते थे। गांधी जी के आश्रम को अगर किसी ने नीरस होने से बचाया हो तो वह बा ही थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साम्य-भाव की शिक्षा—

सन् १९२४ की बात है। बा प्रतिदिन सोते समय गांधी जी के सिर में तेल की मालिश किया करती थीं। एक रात को वह कुछ देर से आईं तो उन्होंने देरी हो जाने का कारण पूछा और कहा—"तेरे पास अगर काम ज्यादा था तो किसी दूसरे से तेल मलने को कह देती।"

बा—"सबको खिलाकर मैंने खाया, फिर बर्तन साफ किये। उसके बाद बंबई जाने वाले रामदास (गांधी जी का तीसरा पुत्र) के लिए रास्ते का खाना और दो-चार दिन का नाश्ता बनाने बैठ गई। इसीलिए आने में देर हो गई, दूसरा ऐसा कोई दिखाई नहीं दिया जिसे तेल मलने का काम सौंप देती।"

गांधी जी—"तुझ पर काम का बहुत बोझ रहता है। यह सब तू कब तक चला सकेगी ? मेरे लिए भी नहाने और खाने-पीने की व्यवस्था तू ही करती है। मेहमानों की आवभगत की जिम्मेदारी भी तुम्हीं पर होती है और मेहमान तो अक्सर आते ही रहते हैं। कपड़ों के लिए सूत कातने का भार भी तूने अपने सिर पर ले रखा है। यह ढेर-सा काम करने के लिए तू समय कहाँ से निकालती है, यही मेरे लिए तो अचरज की बात है और इस भारी बोझ के होते हुए भी तू रामदास के लिए नाश्ता बना रही थी। ऐसा कितने दिन चलेगा ? कल रामदास बंबई जायेगा, परसों तुलसी नेपाल जायेगा, तीसरे दिन सुरेंद्र दिल्ली जायेगा—इस तरह कोई न कोई आदमी तो आश्रम से बाहर जाता ही रहेगा। क्या तू हर आदमी के लिए खाना और नाश्ता बना देगी ?"

बा—"नहीं। लेकिन रामदास मेरा लड़का है। इसलिए देर करके और आपके सिर में तेल मलना छोड़ करके भी उसकी पसंद का खाना मैंने बना दिया। सारे आश्रमवासियों के लिए उनकी पसंद का खाना या नाश्ता तो मैं कैसे बना सकती हूँ ? आप तो महात्मा ठहरे, इसलिए बाहर से आने वाले सभी लोग आपके लड़के हैं। लेकिन मैं अभी महात्मा नहीं बन पाई हूँ। फिर भी आप ऐसा न मानें कि आश्रमवासियों पर मेरा प्रेम कम है। लेकिन अपने सगे लड़के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जैसा तो मैं दूसरों को कैसे मानूँ ? आप छोटी-छोटी बातों पर भी मुझ पर सदा सख्ती करते आये हैं ! क्या मैं अपने लड़के के लिए उसकी पसंद की खाने की दो-चार चीज भी नहीं बना सकती ?"

गांधी जी—"ठीक, यह सोचने जैसी बात है। लेकिन इस समय हम कहाँ बैठे हैं ?"

बा—"सत्याग्रह आश्रम में।"

गांधी जी—"हम अपना राजकोट का घर-बार छोड़कर यहाँ क्यों बैठे हैं ?"

बा—"देश सेवा के लिए। सब भाई-बहन साथ मिलकर सच्चे रास्ते से देश की सेवा करने के लिए यहाँ आये हैं।"

गांधी जी—"जो भाई-बहिन दूर-दूर से अपने माँ-बाप को छोड़कर हमारे पास आये हैं, वे हमें अपने जन्म देने वाले माँ-बाप से क्या कम मानते हैं ?"

बा—"जरा भी नहीं ! आश्रम के सब लोग हम पर अपने माँ-बाप से ज्यादा प्यार रखते हैं। आपके लिए उनके मन में जो अपार भक्ति है, उसी से वे अपने माँ-बाप और घर-बार को छोड़कर यहाँ रहते हैं।"

गांधी जी—"तो बा ! अब तू ही सोच कि हमारा क्या धर्म है ? सभी माताएँ अपने बालकों पर ज्यादा प्रेम रखें, यह स्वाभाविक है। इसलिए रामदास पर तेरे अधिक प्रेम को मैं समझ सकता हूँ और अगर हम राजकोट के अपने घर में होते तो हमारी समूची जायदाद और संपूर्ण प्रेम के भागीदार रामदास, देवदास आदि हमारे लड़के ही होते। वहाँ तू दूसरों को अपने लड़कों के बराबर न मानती तो चल जाता। लेकिन यह आश्रम तो सभी सत्याग्रही सेवकों का है। इसलिए यहाँ तो दूसरे लोग जैसे रहें वैसे ही रामदास को भी रहना चाहिए। जो लोग तुझे अपनी माँ से भी ज्यादा मानते हैं, उन्हें तू रामदास से कम कैसे मान सकती हैं ? इस आश्रम पर आज सारे संसार की नजर लगी हुई है। इससे दुनिया बड़ी-बड़ी आशायें रखती है।"

बा—"आपकी बात सच है। मेरी नजर में सभी रामदास जैसे होने चाहिए।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस प्रकार बा ने क्रमशः अपना दृष्टिकोण विस्तृत करके साम्य-भाव की शिक्षा ग्रहण की थी और वे जाति, धर्म, प्रांतीयता के भेदों से ऊपर उठकर आश्रम में रहने वाले सभी के सुख-दुःख की सच्ची साथी बन गई थीं। इन्हीं गुणों के कारण आज उनको 'राष्ट्रमाता' की उच्च पदवी दी जाती है।

बा का सार्वजनिक जीवन—

दक्षिण अफ्रीका से भारत में आकर गांधी जी ने चंपारन-सत्याग्रह से लेकर १९४२ के "अंग्रेजों ! भारत छोड़ो" आंदोलन तक जितने राजनीतिक कार्यक्रम आरंभ किये उन सबमें बा उनके साथ रही और प्रत्येक अवसर पर आंदोलन में भाग लिया। अन्य सत्याग्रहियों की तरह उन्होंने जेल की सजाएँ भी भोगीं और अंतिम स्वराज्य-संग्राम में तो सरकारी बंधन में रहते हुए जान ही दे दी।

चंपारन में बा को एक ऐसे गाँव में रखा गया था, जिसके समीप एक बहुत ही दुष्ट निलहे गोरे की कोठी थी। गाँव के लोगों में से बहुत से बीमार रहते थे, पर गरीबी के कारण इलाज नहीं करा पाते थे। बा को उनकी बुरी हालत देखकर तरस आता, तो वे घर-घर में जाकर बीमारों की देख-भाल करतीं और उनको अपने पास से दवा देतीं। यह कार्य भी उस निलहे गोरे को बहुत हानिकारक जान पड़ा और उसने अखबारों में शिकायत छपवाई कि—"मि० गांधी नंगे पैर घूमकर और कपड़ों में सादगी बरतकर लोगों में अंधश्रद्धा पैदा करते हैं और उससे फायदा उठाना चाहते हैं। यही नहीं, जब वे दूसरी राजनीतिक हलचलों को चलाने के लिए बाहर चले जाते हैं तो श्रीमती गांधी यहाँ लोगों को भड़काने के अपने पति का काम जारी रखती हैं।"

जब सन् १९२२ में "चौरी चौरा की दुर्घटना" के बाद गांधी जी को गिरफ्तार करके छह साल की सजा दी गई तब बा ने देश के नाम एक संदेश में जनता को उत्साहित करते हुए कहा था—"आज मेरे पति को छह साल की सजा हुई है। इस जबरदस्त सजा से मैं थोड़ी बेचैन हुई हूँ। सो मुझे मंजूर करना चाहिए। लेकिन हम चाहें तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सजा की मुद्दत पूरी होने से पहले ही उनको छुड़ा सकते हैं। यह कार्य हमारे हाथ की बात है। इसलिए मैं मेरे दुःख में हमदर्दी रखने वाले सभी स्त्री-पुरुषों से प्रार्थना करती हूँ कि वे रात-दिन लगे रहकर रचनात्मक कार्यक्रम को सफल बनावें। गाँधी जी को दी गई सजा का यही सच्चा जवाब है।"

सन् १६३० के नमक-सत्याग्रह में तो बा ने इतना काम किया कि सरकारी अफसर भी उनसे डरने लगे। दांडी कूच के समय जब आंदोलन में भाग लेने वाली बहनों ने पूछा कि इस बार हमें क्या करना चाहिए ? तो गांधी जी ने बताया कि उनको नमक बनाकर जेल जाने की आवश्यकता नहीं। इसके बजाय विदेशी कपड़े का बहिष्कार और शराबबंदी का काम करना है। शीघ्र ही गांधी जी ने सूरत में स्त्रियों की एक बड़ी सभा की, जिसमें बंबई तक की स्त्रियाँ आईं और कुल चार-पाँच हजार स्त्रियों ने भाग लिया। उस अवसर पर "स्त्री स्वराज्य संघ" की स्थापना की गई और जिले भर में विदेशी वस्त्र बायकाट और शराबबंदी के लिए स्त्रियों की छावनियाँ कायम की गईं। इसके बाद समस्त कार्य का भार बा और मीरा बहन पर छोड़कर गांधी नमक सत्याग्रह का संघर्ष करने आगे चल दिये। इन दोनों ने अन्य सैकड़ों बहनों को साथ लेकर इस खूबी से काम किया कि सूरत जिले की शराब की तमाम दुकानें सुनसान हो गईं।

इस पर सरकार ने कानून और नियमों को उठाकर ताक पर रख दिया और फेरी लगाकर शराब और ताड़ी बेचने की इजाजत दे दी। साथ ही यह भी कोशिश करने लगी कि स्त्रियों की छावनी के लिए मकान न दें। जब स्त्रियों ने छप्पर डालकर छावनियाँ बना लीं तो पुलिस वाले आकर उनके बर्तन-भाँड़े उठा ले गए और छप्परों में आग लगा दी। इस पर बा ने कहा—"अब हम चटाई तानकर रहेंगे और मिट्टी के बर्तन रखेंगी। फिर देखें वे क्या ले जाते हैं ?"

जब गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद स्वयंसेवकों पर लाठियाँ बरसाई गईं तो सैकड़ों व्यक्ति घायल अवस्था में अस्पताल में पहुँचाये गए। बा तुरंत वहाँ पहुँची और उनकी हालत देखकर बड़ी दुःखी हुईं। एक सवाददाता के पूछने पर उन्होंने कहा—"बिछौनों पर पड़े उन भाइयों की मरहम पट्टी और बैंडेज बगैरह का वह करुण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दृश्य देखकर मेरा दिल फटने लगा। पुलिस ने उन पर जैसा जुल्म किया, उसे सुनकर मैं काँप उठी। चारों तरफ से ऐसे ही जुल्मों की कहानियाँ आ रही हैं। इसलिए सब कोई इस काम में एक-दूसरे की सहायता करें और साथ दें, तभी हमारा काम सफल होगा। वायसराय के नये काले कानूनों का विरोध करने के लिए हमको अपना आंदोलन अब दुगुने उत्साह से चलाना चाहिए।" कहने की आवश्यकता नहीं कि बा ने इस काम को इतने जोर-शोर से किया कि सरकार ने उनको गिरफ्तार कर लिया और सन् १९३२ तथा १९३३ में उनका ज्यादा समय जेलखाने में ही बीता।

सन् १९४२ की लड़ाई में तो बा को भी गांधी जी की गिरफ्तारी के कुछ घंटे बाद ही पकड़कर उनके पास आगाखाँ महल की जेल में पहुँचा दिया गया। यह जेल खासकर गांधी जी और उनके कुछ आश्रमवासी साथियों के लिए ही बनाई गई थीं और उसमें सरकार ने उनको सब प्रकार की सुविधाएँ भी दी थी। पर इस बार सरकार ने गांधी जी को जिस प्रकार बिना आंदोलन आरंभ किये ही पकड़ा था, उससे बा का मन खट्टा हो गया। जेल में उनको एक प्रकार का खेद ही बना रहा, जिसने धीरे-धीरे उनके जीवन का अंत कर दिया।

बा का आदर्श गृहस्थ-जीवन—

जिस तरह से पति सेवा, कर्तव्यपरायणता, सबके सुख-दुःख की चिंता, त्याग-वृत्ति आदि बातों में बा ने एक उच्च उदाहरण उपस्थित किया, उसी प्रकार अपने गृहस्थ-जीवन में भी प्राचीन भारतीय आदर्श का पूरी तरह से पालन करके दुनिया को चकित कर दिया था। ३८ वर्ष की आयु में गांधी जी ने यह निश्चय किया कि अब हम दोनों को काम वासना का त्याग करके भाई-बहिन की तरह रहना चाहिए। वर्तमान समय की अधिकांश स्त्रियों की मनोवृत्ति को देखते हुए यह एक बड़ा कठिन और अस्वाभाविक-सा निश्चय था, पर बा ने इसे स्वीकार करने में कुछ भी आगा-पीछा न किया और जीवन के पिछले ३७ वर्ष ब्रह्मचर्य-व्रत को मनसा-वाचा-कर्मणा पालन करते हुए व्यतीत किए। इस संबंध में स्वयं गांधी जी का यह कथन है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"ब्रह्मचर्य-व्रत के पालन में बा ने कभी मेरा विरोध नहीं किया, या बा कभी उसे तोड़ने के लिए ललचायी नहीं। इसका फल यह हुआ कि हम दोनों का संबंध सच्चे मित्रों का-सा हो गया। मेरे साथ रहने में बा के लिए सन् १९०६ से, सच पूछा जाय तो सन् १९०१ से, मेरे काम में घुल-मिल जाने के सिवा या उसके बाहर कुछ रह ही नहीं गया था। वह मेरे काम से अलग रह सकती थी, अलग रहने में उसे कोई कठिनाई न होती, लेकिन मित्र होते हुए भी उसने स्त्री के नाते और पत्नी के नाते मेरे काम में समा जाने में ही अपना धर्म माना। इसमें मेरी निजी सेवा को बा ने अनिवार्य-अटल स्थान दिया। यही कारण है कि मरते दम तक मेरी सुख-सुविधा का उसने ध्यान रखा।"

गांधी जी का यह कथन निराधार नहीं था। २२ फरवरी को भी, जिस दिन बा का देहावसान हुआ, उन्होंने अपनी दौहित्री मनु बहिन से कहा—"मनु, बापू जी की बोतल का गुड़ खत्म हो गया है। तूने दूसरा तैयार किया।"

मनु बहन ने कहा—"हाँ, मोटी बा, गुड़ सिगड़ी पर ही है, अभी तैयार हो जाता है।"

बा ने कहा—"देख, मेरे पास तो कई लोग बैठे हैं। तू जा। बापू जी को दूध और गुड़ देकर तू भी भोजन कर ले।"

इसी को कहा जा सकता है सच्ची और निःस्वार्थ सेवा-भावना। जब यह मालूम है कि अब हम कुछ घंटों में इस संसार को छोड़ने ही वाले हैं, तब भी अपनी चिंता न करके दूसरों का ख्याल रखना ही महानता का लक्षण है। बा ने आजीवन गांधी जी के साथ ऐसा ही व्यवहार किया। यहाँ तक कि अपनी मृत्यु से ठीक एक वर्ष पहले उन्होंने अपने मरने की कामना करके गांधी जी को मृत्यु के मुख से निकाला। इसका वर्णन करते हुए "बा और बापू" पुस्तक में कहा गया है—

"सन् १९४२ में जेलवास के समय बा की तबियत बहुत कमजोर थी। लेकिन जब गांधी जी ने सरकार के अन्याय के विरुद्ध उपवास शुरू किया तो बा ने अपनी निर्बलता का ध्यान छोड़ दिया और उनमें एक नई चेतना भर गई। हमेशा की तरह इस उपवास के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय भी बा फलाहार करने लगी। २१ दिन तक उन्होंने अन्न का स्पर्श भी नहीं किया। उपवास के समय बा ने अनोखी हिम्मत रखी और खड़े पैरों बापू की सेवा की।

"उपवास ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता गया, बापू की स्थिति ज्यादा नाजुक होती गई। उपवास बढ़ने के साथ बा की तुलसी-पूजा और बालकृष्ण की पूजा का समय भी बढ़ता गया और वह पूजा अधिक भक्तिपूर्ण बनती गई। २२ फरवरी १९४३ के दिन बापू जीवन और मरण के बीच झूलने लगे। उस समय मीरा बहिन चुपचाप डॉ० सुशीला बहिन को बुलाकर बाहर ले गईं। वहाँ बा तुलसी के आगे घुटने टेककर प्रार्थना कर रही थीं। बा के चेहरे पर दिखाई देने वाले भाव इतने करुण, इतने दीन थे कि देखने वालों की आँखों में भी आँसू आ गए। अपने ध्यान में बा इतनी लीन हो गई थी कि उन्हें इस बात का पता ही न चला कि कौन उनके पास आकर खड़ा हो गया।

उस दिन दस मिनट तक प्रयत्न करने पर भी बापू आधा औंस पानी गले के नीचे नहीं उतार सके। अंत में वे इतने थक गये कि बैसुध होकर बिस्तर पर गिर गये। उनकी नाड़ी कमजोर पड़ गई और शरीर पसीने से तर हो गया। उनमें बोलने की तो क्या, हाथ से इशारा करने की ताकत भी नहीं रही।

बा तो अपनी प्रार्थना में लीन थीं। सुशीला बहिन ने डरते-डरते बापू जी के पास जाकर कहा—"बापू जी ! क्या अभी भी मौसमी का रस लेने का समय नहीं आया है ?" यद्यपि जब से उपवास शुरू हुआ था, बार-बार कहने पर भी गांधी जी ने रस लेने से इनकार कर दिया था। पर इस समय कई मिनट सोचने के बाद उन्होंने इशारे से 'हाँ' कहा। सुशीला बहिन ने तुरंत दो औंस रस और दो औंस पानी मिलाकर पिलाया। इसके शरीर में पहुँचते ही बापू जी के फीके और निस्तेज चेहरे पर जीवन की किरणें झलकने लगीं।

इतने में बा भीतर आ गई। भगवान् ने उनकी प्रार्थना सुन ली थी और गांधी जी की प्राण-रक्षा हो चुकी थी। इस घटना के ठीक एक वर्ष बाद २२ फरवरी १९४४ की महाशिवरात्रि के दिन बा का स्वर्गवास हुआ। इस घटना को याद करके किसी ने कहा—"गये वर्ष इसी दिन बापू यमराज के मुँह में थे। बा ने सावित्री की तरह उन्हें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यमराज के मुँह से छुड़ाया होगा और उन्हें यह वचन दिया होगा कि अगले वर्ष इसी दिन मैं आपके साथ चलूँगी।"

इस तरह पति के जीवन में समा जाना, उनका पदानुसरण करना और उनके लिए सदा आत्म-त्याग करने को तैयार रहना बा का स्वाभाविक गुण था। यह बात उनमें सत्याग्रह आश्रम में निवास करने पर ही नहीं आई थी, वरन् बहुत पहले से ही मौजूद थी। सन् १६१३ में जब वे दक्षिण अफ्रीका में थीं, गांधी जी के परिवार के आदरणीय सदस्य श्री कालीदास भाई उनके यहाँ आये। जब उन्होंने बा को रसोई की सफाई अपने हाथ से करते देखा तो वे गांधी जी से कहने लगे—"भाई, तुमने तो अपने जीवन में भारी परिवर्तन कर डाला है; रहन-सहन बहुत अधिक सादा बना लिया है। पर इस बेचारी कस्तूरबा ने तो कोई मौज-शौक नहीं जाना।"

गांधी जी—"मैंने इसे मौज-शौक करने से कब रोका है ?"

बा—"तो बताइये, मैंने आपके घर में क्या मौज-शौक किया है ?"

गांधी जी—"मैंने तुझे गहने पहनने या अच्छी रेशमी साड़ियाँ पहनने से कब रोका ? और जब तेरी इच्छा हुई तब क्या मैं तेरे लिए सोने की चूड़ियाँ भी बनवाकर नहीं लाया ?"

बा ने कुछ गंभीर होकर कहा—"आपने तो सभी कुछ मुझे ला दिया। लेकिन मैंने उसे कब काम में लिया ? मैंने समझ लिया कि आपका रास्ता अलग है। आपको साधु-संन्यासी बनना है। तब भला मैं मौज-शौक से रहकर क्या करती ? आपका मन जान लेने के बाद मैंने भी अपने मन को मोड़ लिया और दुनिया का रास्ता छोड़ दिया।"

ऐसा था बा और बापू का दांपत्य-जीवन। गांधी जी बा को एक सामान्य स्त्री से ऊँचा उठाने के लिए हर तरह से—बातों से, व्यवहार से, नरमी से, सख्ती से उच्च शिक्षाएँ देते गए और वह उन पर अविचल श्रद्धा रखते हुए बदलती गईं, आगे बढ़ती गईं। यद्यपि प्रकट में उनमें कुछ झगड़ा, कहा-सुनी होती जान पड़ती थी, पर आंतरिक रूप से दोनों एक थे, एक-दूसरे के गुणों को समझते थे, इसीलिए जब किसी नई विचार वाली लेखिका ने बा को एक पत्र लिखा, जिसमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गांधी जी के व्यवहार को अनुचित बतलाते हुए उनके प्रति सहानुभूति दर्शाई गई, तो बा को इस तरह का लिखना बहुत खराब जान पड़ा और उन्होंने तुरंत ही उसको पत्रोत्तर में लिखा—

"तुम्हारा पत्र मुझे बहुत खटकता है। मेरी और तुम्हारी तो किसी दिन बातचीत भी नहीं हुई। तब तुमने कैसे जाना कि गांधी जी मुझे बहुत दुःख देते हैं ? मेरा चेहरा उदास और उतरा हुआ रहता है, खाने-पीने के बारे में भी गांधी जी दुःख देते हैं, यह कभी तुम देखने आई थीं ?

"मुझे जैसा पति मिला है वैसा तो दुनिया में किसी स्त्री को नहीं मिला होगा। वे अपने सत्य से सारे जगत् में पूजे जाते हैं। हजारों लोग उनसे सलाह लेने आते हैं। मेरी गलती के बिना उन्होंने कभी मेरा दोष नहीं निकाला। हाँ मेरे विचार उदार न हों, मेरी दृष्टि ओछी हो तो जरूर वे मुझ से कहते हैं। लेकिन यह तो दुनिया में चलता आया है। पर अपने पति के कारण ही मैं सारी दुनिया में पूजी जाती हूँ। मेरे सगे-संबंधियों के मन में मेरे लिए खूब प्रेम है। मेरे मित्र मेरा आदर करते हैं।"

"तुम मेरे दुःख की जो गलत बात कहती हो उसे कोई मानेगा नहीं। हाँ, मैं तुम्हारी जैसी नये जमाने की नहीं हूँ। नये जमाने की स्त्री मानती है कि जीवन में खूब स्वतंत्रता ली जाय, पति हमारे वश में रहे तो ठीक, वरना उसका और हमारा रास्ता अलग ! लेकिन हिंदू स्त्री को ऐसा करना शोभा नहीं देता। पार्वती जी का प्रण था कि जन्म-जन्म में शंकर ही उनके पति रहेंगे। वैसा ही मेरा समझो।"

उधर गांधी जी का भी यह कहना था कि "मेरी पत्नी के प्रति अपनी भावना का वर्णन यदि मैं कर सकूँ तो ही हिंदू धर्म के प्रति मेरी क्या भावना है, उसे प्रकट कर सकता हूँ। मेरी पत्नी मेरे अंतर को जिस प्रकार हिलाती है, उस प्रकार दुनिया की कोई दूसरी स्त्री उसे हिला नहीं सकती। उसके लिए ममता के एक अटूट बंधन की भावना मेरे अंतर में जाग्रत् रहती है।"

युग-पुरुष गांधी को इतना प्रभावित करके नारी जाति का महत्त्व बढ़ाना कोई साधारण बात नहीं है। बा के इस गुण और महानता की प्रशंसा बड़े-बड़े विद्वानों और विचारकों ने की है। श्रीमती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गोशी बहिन (कैप्रिन) ने बा के निकट रहकर और उनकी अंतरंग भावनाओं का अध्ययन करके यह लिखा था—"बा और सरोजिनी देवी को देखकर ही हमें इस बात का अंदाज हो सकता है कि नारीत्व में कितना गौरव और कितना वैभव रहा है ? कितनी विविधता, कितनी तेजस्विता और कितना सनातन यौवन ? इन दो स्त्रियों को देखने से क्या हमें इस बात का दिव्य दर्शन नहीं होता कि हमारी भारतभूमि नारियों की भूमि है।"

स्वयं श्रीमती सरोजिनी नायडू ने, जो बा और बापू के साथ प्रायः रहती थीं, बा का देहावसान होने पर लिखा था—"भारतीय स्त्रीत्व के जीते-जागते प्रतीक-सी, उस नाजुक किंतु वीर नारी की आत्मा को चिर शांति प्राप्त हो ! जिस महापुरुष को वे चाहतीं, जिसकी वे सेवा करतीं और अद्वितीय श्रद्धा, धैर्य और भक्ति के साथ जिसका वे अनुसरण करतीं, उसके लिए वे निरंतर कुर्बानी करती रहीं। जिस कठिन मार्ग को उन्होंने अपनाया था, उस पर चलते हुए उनके पैर एक क्षण के लिए भी लड़खड़ाये नहीं और न उनके दिल ने कभी गच्ची खाई। वे मातृत्व से अमरत्व में गईं और हमारी गाथाओं, गीतों और हमारे इतिहास की वीरांगनाओं की मंडली में अपना वास्तविक स्थान पा गईं।"

आज भारतीय नारियाँ जिस प्रकार अविद्या और रूढ़ियों में ग्रस्त हो रही हैं और सार्वजनिक क्षेत्र में उनका नगण्य स्थान है, उसे देखते हुए सामान्य पाठकों को ये उद्‌गार अतिशयोक्ति जैसे लग सकते हैं। पर इन्हीं स्त्रियों में से वैदिक ऋचाओं की रचयित्री विश्ववारा, ब्रह्मवादिनी गार्गी, शंकराचार्य से शास्त्रार्थ करने वाली भारती, यमराज का सामना करने वाली सावित्री जैसी स्त्रियाँ भी हो चुकी हैं। चाहे निकटवर्ती होने के कारण सब लोग बा की इस महानता को अनुभव न कर सकें, पर भावी इतिहासकार उनकी गिनती उसी परंपरा में करेंगे। अधिकांश लोगों का दृष्टिकोण बहुत सीमित-संकीर्ण होता है, वे हर एक को अपने छोटे से पैमाने से ही नाप सकते हैं। जैसा गोशी बहन ने अनुभव किया, वे बा और सरोजिनी देवी के "गौरव" और "वैभव" को नहीं देख पाते। बा उनको रसोईघर में काम करती हुई एक सामान्य स्त्री और सरोजिनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवी एक स्वच्छंद तथा फैशनेबिल महिला ही जान पड़ेंगी। पर अगर वे समाज की प्रगति और विकास का लेखा-जोखा लगाने में समर्थ हो सकें तो उनको विदित होगा कि गांधी जी के बीस वर्ष व्यापी असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली नारियों के त्याग और आत्म बलिदान ने ही यह स्थिति उत्पन्न कर दी है कि भारतीय स्त्री राजदूत, राज्यपाल (गवर्नर), मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के सर्वोच्च पदों तक पहुँच सकी हैं।

हम विदेशों की तरह घर का काम-काज छोड़कर नारियों के पूरी तरह क्लर्क या कारखानों के कर्मचारी बन जाने के पक्ष में नहीं हैं। यह बात हमारे प्राचीन आदर्शों और संस्कृति के प्रतिकूल हैं और मानव समाज की वर्तमान स्थिति में कल्याणकारी भी नहीं मानी जा सकती। इसीलिए हम कस्तूर बा को एक ऐसी महान् भारतीय स्त्री मानते हैं, जिन्होंने अंत समय तक गृहस्थी का संचालन और पति सेवा के आदर्श का पूर्ण रूप से पालन करते हुए, सार्वजनिक जीवन में भी अच्छी तरह भाग लेकर नारियों के अधिकारों के मार्ग को प्रशस्त बनाया।

❐ ❐

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org